BACKGROUNDERS
Press Information Bureau
Government of India

जीआई टैग: वैश्विक ब्रांडों में पारंपरिक संपदा की वृद्धि

04 अगस्त 2026

भौगोलिक संकेत (जीआई) टैग स्थानीय समुदायों के लिए आर्थिक अवसर पैदा करते हुए भारत की सांस्कृतिक विरासत की रक्षा के लिए एक शक्तिशाली माध्यम के रूप में उभरा है। उत्पादों को उनके मूल स्थान से जोड़कर, जीआई टैग पारंपरिक ज्ञान को संरक्षित करते हैं, दुरुपयोग को रोकते हैं और उपभोक्ता विश्वास को बढ़ाते हैं। वे कारीगरों, बुनकरों, किसानों और उत्पादक समूहों को बेहतर बाजार पहचान हासिल करने और प्रीमियम बाजारों तक पहुंच प्राप्त करने में मदद करते हैं। पिछले कुछ वर्षों में भारत के जीआई इकोसिस्टम का काफी विस्तार हुआ है, जो एक मजबूत कानूनी ढांचे और बढ़ती जन जागरूकता द्वारा समर्थित है। सरकार की पहल वित्तीय सहायता, निर्यात संवर्धन, पर्यटन एकीकरण और समर्पित विपणन प्लेटफार्मों के माध्यम से इस इकोसिस्टम को और मजबूत कर रही है। साथ ही, ये प्रयास जीआई उत्पादों को ग्रामीण विकास, सांस्कृतिक संरक्षण और निर्यात-आधारित विकास के वाहकों के रूप में बदल रहे हैं।

जीआई टैग- भारत के अनूठे उत्पादों की सुरक्षा

बनारस में एक बुनकर एक बनारसी साड़ी बनाने में कई सप्ताह का समय लगाता है। जटिलतापूर्ण जरी के काम का हर धागा असाधारण सटीकता और कौशल के साथ बुना जाता है। ये तकनीकें रातोंरात नहीं सीखी जाती हैं। वे सदियों पुरानी परंपरा को संरक्षित करते हुए पीढ़ियों से चले आ रहे हैं।

फिर भी, इन प्रयासों और शिल्प कौशल के बावजूद, कई प्रामाणिक बनारसी साड़ियां अक्सर अपने वास्तविक मूल्य से बहुत कम कीमतों पर बेची जाती हैं। खरीदार हमेशा हाथ से बुनी हुई असली साड़ी को

अन्य नकलों से अलग करने में सक्षम नहीं हो सकते हैं। यह वह जगह है जहां दो शब्द यानी **जीआई टैग (भौगोलिक संकेत)** सभी अंतर बनाते हैं।

एक जीआई टैग प्रमाणित करता है कि साड़ी वास्तव में बनारस में पारंपरिक तरीकों का उपयोग करके बनाई गई है। यह खरीदारों को इसकी **प्रामाणिकता, गुणवत्ता और सांस्कृतिक विरासत** का आश्वासन देता है। परिणामस्वरूप, प्रामाणिक बनारसी साड़ी **घरेलू और अंतरराष्ट्रीय बाजारों** में काफी अधिक कीमत प्राप्त कर सकती है। यह सुनिश्चित करता है कि बुनकर को **उनकी शिल्प कौशल के लिए** अधिक मान्यता **और** बेहतर आर्थिक लाभ मिले।

भारतीय परंपरा, अर्थव्यवस्था, स्थिरता में जीआई वस्तुओं का महत्व

जीआई टैग कारीगर शिल्प के लिए प्रामाणिकता की मुहर **के रूप में कार्य करता** है, उन्हें नकल, दुरुपयोग और अनधिकृत व्यावसायीकरण से बचाता है। हालांकि, इसका महत्व कानूनी सुरक्षा से कहीं आगे तक फैला हुआ है। उदाहरण के लिए, चन्नापटना के खिलौनों को 2006 में जीआई मान्यता मिली। ये मान्यता सिर्फ कर्नाटक के चन्नापटना क्षेत्र में बने लकड़ी के खिलौनों पर ही लागू होती है। खिलौनों का उत्पादन क्षेत्र की विशिष्ट लाह कला का उपयोग करके किया जाना चाहिए। हालांकि यह एक सरल प्रमाणन प्रतीत हो सकता है, टैग दूरगामी लाभ प्रदान कर सकता है।

एक जीआई टैग एक लेबल से कहीं अधिक है। वस्त्र मंत्रालय के अनुसार, यह ग्रामीण कारीगरों की आय को 20-30 प्रतिशत तक बढ़ा सकता है!

- किसी उत्पाद की उत्पत्ति और अनूठी विरासत को प्रमाणित करके, जीआई टैग खरीदारों के बीच विश्वास पैदा करते हैं और **उत्पाद की बाजार अपील को बढ़ाते हैं।**
- जैसे-जैसे उपभोक्ता तेजी से प्रामाणिकता, परंपरा और शिल्प कौशल की तलाश कर रहे हैं, जीआई मान्यता **गुणवत्ता और सांस्कृतिक विशिष्टता के एक शक्तिशाली प्रतीक के** रूप में कार्य करती है।
- जीआई-टैग किए गए उत्पादों की बढ़ती मांग कारीगरों को **अधिक दृश्यता प्राप्त करने, प्रीमियम बाजारों तक पहुंचने, उनकी सौदेबाजी की शक्ति को मजबूत करने** और उनके काम से उत्पन्न मूल्य के एक बड़े हिस्से पर कब्जा करने में सक्षम बनाती है।
- मान्यता स्थायी **आजीविका के अवसर** पैदा करती है। वे **भविष्य की पीढ़ियों के लिए** भारत की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत और स्वदेशी शिल्प कौशल को संरक्षित करने और बढ़ावा देने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

मुजफ्फरनगर गुड़ की सफलता की कहानी: स्थानीय विशेषता से लेकर वैश्विक बाजारों तक

मुजफ्फरनगर गुड़ के लिए जीआई टैग ने विशिष्ट गुणवत्ता और उत्पत्ति के साथ एक प्रीमियम उत्पाद के रूप में अपनी पहचान को मजबूत करने में मदद की है। इस मान्यता का लाभ उठाते हुए, बृजनंदन एग्रो फार्मर प्रोड्यूसर कंपनी ने 2025 में बांग्लादेश को 30 मीट्रिक टन गुड़ का सफलतापूर्वक निर्यात किया। जीआई प्रमाणन ने खरीदारों के विश्वास को बढ़ाया और अंतरराष्ट्रीय बाजारों में उत्पाद की विपणन क्षमता में सुधार किया। परिणामस्वरूप, किसान के नेतृत्व वाली कंपनी को निर्यात के अवसरों तक पहुंच प्राप्त हुई। इसने अपने 545 सदस्यों के लिए आय की संभावनाओं को बढ़ाया और स्थानीय रूप से उत्पादित गुड़ के लिए अधिक मूल्य कायम किया।

जीआई टैग का इतिहास, दर्जा और विनियमन

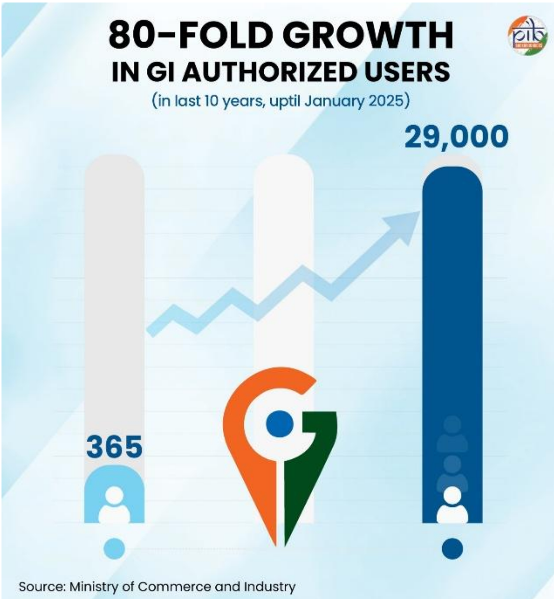

पश्चिम बंगाल की दार्जिलिंग चाय जीआई टैग प्राप्त करने वाला भारत का पहला उत्पाद था, जिसमें उत्पाद और उसके लोगो दोनों को सुरक्षा प्रदान की गई थी। अन्य शुरुआती पंजीकरणों में **केरल के एक पारंपरिक हस्तशिल्प** अरनमुला कन्नडी और तेलंगाना के एक प्रसिद्ध वस्त्र शिल्प **पोचमपल्ली इकत** शामिल थे।

पिछले 10 वर्षों में, जीआई टैग के लिए अधिकृत उपयोगकर्ता 365 से बढ़कर 29,000 (जनवरी 2025 तक) हो गए।

ठोस भरण के साथ विचार वाला व्यक्ति

भारत 800 से अधिक पंजीकृत जीआई उत्पादों का घर है और 2014 से 607 जीआई प्रदान किए गए हैं।

जीआई का विनियमन

बौद्धिक संपदा के एक रूप के रूप में, जीआई को **औद्योगिक संपदा के संरक्षण के लिए पेरिस कन्वेंशन** और **बौद्धिक संपदा अधिकारों के व्यापार से संबंधित पहलुओं पर विश्व व्यापार संगठन (डब्ल्यूटीओ) के समझौते (ट्रिप्स)** के तहत अंतरराष्ट्रीय स्तर पर मान्यता प्राप्त है। भारत में, उनके पंजीकरण और संरक्षण की देखरेख **1999 अधिनियम के तहत भौगोलिक संकेत रजिस्ट्री द्वारा की जाती है।**

भारतीय जीआई उत्पादों के लिए प्रमुख निर्यात स्थलों में ब्रिटेन, इटली, यूएई, बहरीन, कतर, **अमेरिका**, दक्षिण कोरिया शामिल हैं।

भारत ने **वस्तुओं का भौगोलिक संकेत (पंजीकरण और संरक्षण) अधिनियम, 1999** और 2002 में अधिसूचित संबद्ध नियमावली के माध्यम से विशिष्ट क्षेत्रों से जुड़े उत्पादों की सुरक्षा के लिए एक कानूनी ढांचा स्थापित किया है। यह ढांचा 2003 में चालू हो गया और जीआई पंजीकरण 2004-05 में शुरू हुआ। वस्तुओं के भौगोलिक संकेत (पंजीकरण और संरक्षण) नियमावली, 2002 को 2025 में संशोधित किया गया था।

2025 संशोधन के माध्यम से, जीआई आवेदन दाखिल करने और संबंधित प्रक्रियाओं के लिए शुल्क में 80 प्रतिशत की कमी की गई है। टैग के लिए नवीनीकरण शुल्क भी 3,000 रुपये से घटाकर केवल 500 रुपये कर दिया गया है!

जीआई टैग उत्पादों वाले प्रमुख सेक्टर और राज्य

भारत हस्तशिल्प उत्पादों, कृषि उत्पादों, निर्मित वस्तुओं, खाद्य उत्पादों और प्राकृतिक उत्पादों **जैसी श्रेणियों में जीआई-टैग वाले उत्पादों का केन्द्र है।**

- **हस्तशिल्प उत्पाद-** अधिनियम के तहत 445 हस्तशिल्प उत्पाद और 27 उत्पाद लोगो (दिसंबर 2025 तक) पंजीकृत किए गए हैं। उदाहरण के तौर पर *जम्मू-कश्मीर* की पश्मीना, *पश्चिम बंगाल* की बालूचरी साड़ी *और उत्तर प्रदेश की* बनारस गुलाबी मीनाकारी शिल्प शामिल हैं।
- **कृषि उत्पाद-** 251 उत्पादों को पंजीकृत किया गया है, जो अनाज, फल, सब्जियां, मसाले और गैर-बासमती चावल सहित विभिन्न प्रकार की फसलों में फैले हुए हैं।
- **विनिर्माण उत्पाद-** 64 विनिर्माण उत्पादों को पंजीकृत किया गया है, जैसे नासिक *वैली वाइन* और *कन्नौज परफ्यूम।*
- **खाद्य उत्पाद-** 66 खाद्य उत्पाद, जिनमें तैयार, पके हुए या प्रसंस्कृत व्यंजन शामिल हैं, जीआई टैग किए गए हैं। पश्चिम बंगाल के *बर्धमान मिहिदाना* और *सीताभोग,* ओडिशा के *केंद्रपाड़ा रसाबली* और आंध्र प्रदेश के प्रसिद्ध *तिरुपति लड्डू* इसके उदाहरण हैं।
- **प्राकृतिक उत्पाद-** 5 प्राकृतिक उत्पाद- *मकराना मार्बल* (राजस्थान), *चुनार बलुआ पत्थर* (उत्तर प्रदेश), *पुरुलिया के* लाख *(लाह) उत्पाद (*पश्चिम बंगाल), *पन्ना हीरा* (मध्य प्रदेश) और *अंबाजी सफेद संगमरमर* (गुजरात) भारत में जीआई-टैग हैं। जबकि ये सख्ती से "प्राकृतिक" उत्पाद हैं, सैकड़ों अन्य प्राकृतिक मूल के सामान कृषि उत्पादों की श्रेणी में आते हैं।

भारत के कई **राज्य भारत की जीआई विरासत को आगे बढ़ा रहे हैं।** दिसंबर 2025 तक, उत्तर प्रदेश 81 जीआई-टैग उत्पादों के साथ अग्रणी राज्य है। इसके बाद तमिलनाडु (76 जीआई-टैग उत्पाद) और महाराष्ट्र (55 जीआई-टैग उत्पाद) का स्थान है।

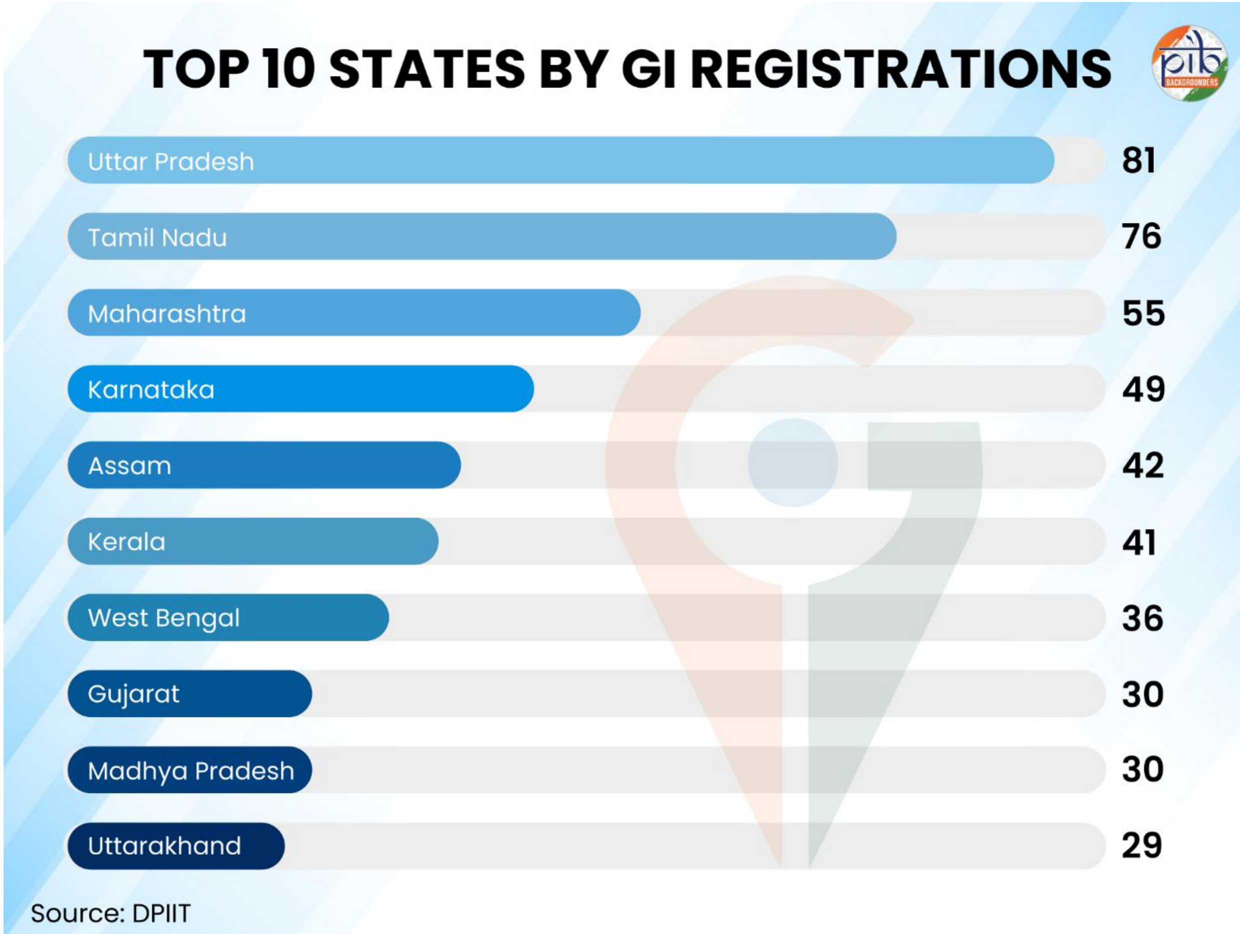

जीआई टैग: पंजीकरण, सुरक्षा और नवीनीकरण

इससे पहले कि कोई उत्पाद प्रमाणन प्राप्त कर सके, उसे विशिष्ट कानूनी और प्रक्रियात्मक आवश्यकताओं को पूरा करना होगा। भारत की जीआई पंजीकरण प्रणाली परिभाषित करती है कि कौन आवेदन कर सकता है, सुरक्षा कितने समय तक चलती है, और किन परिस्थितियों में जीआई रद्द किया जा सकता है।

जीआई पंजीकरण फ्रेमवर्क

कानून के तहत स्थापित उत्पादकों, संगठन या प्राधिकरण का कोई भी संघ जीआई पंजीकरण के लिए आवेदन कर सकता है। आवेदक को एक **कानूनी इकाई होनी चाहिए** और संबंधित उत्पाद के उत्पादकों के हितों का प्रतिनिधित्व करना चाहिए। यदि आवेदक एक निर्माता संघ नहीं है, तो उसे यह साबित करना होगा कि यह उत्पादकों के हितों का प्रतिनिधित्व करता है। इसी तरह, पंजीकरण के लिए आवेदन करने वाले प्राधिकरण को यह भी प्रदर्शित करना होगा कि यह उत्पाद के उत्पादकों का प्रतिनिधित्व करता है।

आवेदन या कोई अन्य दस्तावेज सीधे जीआई पंजीकरण में दाखिल किया जा सकता है। इसे डाक, पंजीकृत डाक, स्पीड पोस्ट या कूरियर सेवाओं द्वारा भी भेजा जा सकता है। **जीआई रजिस्ट्री** भौगोलिक संकेत रजिस्ट्री, चेन्नई में स्थित है, जिसका अखिल भारतीय क्षेत्राधिकार है।

जीआई का पंजीकरण दस साल के लिए वैध है, लेकिन समय-समय पर इसका नवीनीकरण किया जा सकता है।

जीआई के तहत जिसे पंजीकृत नहीं किया जा सकता

- सामान्य उत्पाद नाम अब अपने मूल देश में संरक्षित नहीं हैं।
- ऐसे संकेत जो उपभोक्ताओं को गुमराह करते हैं या गलत तरीके से एक अलग भौगोलिक उत्पत्ति का सुझाव देते हैं।
- ऐसे संकेत जो धार्मिक भावनाओं को ठेस पहुंचाते हैं या जिनमें निंदनीय, आपत्तिजनक या अश्लील बात होती है।
- ऐसे संकेत जो कानूनी सुरक्षा के लिए पात्र नहीं हैं या जो लागू किसी भी कानून का उल्लंघन करते हैं।

क्या जीआई टैग रद्द किया जा सकता है?

जीआई पंजीकरण का निरसन, रद्दीकरण या भिन्नता अधिनियम की धारा 27 द्वारा नियंत्रित होती है। कोई भी पीड़ित व्यक्ति पंजीकृत जीआई को रद्द करने या उसमें बदलाव करने के लिए पंजीयक या सक्षम प्राधिकारी के पास आवेदन कर सकता है। यदि आवश्यक हो तो पंजीयक या अपीलीय बोर्ड भी स्वयं इस तरह की कार्रवाई शुरू कर सकता है।

जीआई पंजीकरण रद्द या निरस्त किया जा सकता है यदि:

- यह धोखाधड़ी या गलत बयानी के माध्यम से प्राप्त किया गया था।
- यह अब अपने मूल देश में संरक्षित नहीं है या अनुपयोगी हो गया है।
- इसके उपयोग से उपभोक्ताओं को धोखा मिलने की संभावना है, किसी भी कानून का उल्लंघन होता है, या इसमें निंदनीय या अश्लील बात होती है।

जीआई टैग को मजबूत करने हेतु योजनाएं और नीतियां

सरकार जागरूकता, बाजार पहुंच, निर्यात और कानूनी सुरक्षा में सुधार के उद्देश्य से पहल **के माध्यम से जीआई उत्पादों को बढ़ावा दे रही है।** *आत्मनिर्भर भारत* और *वोकल फॉर लोकल* के दृष्टिकोण के अनुरूप, ये प्रयास कारीगरों, किसानों और उत्पादक समुदायों को सशक्त बना रहे हैं। वे भारत के अद्वितीय क्षेत्रीय उत्पादों की घरेलू और वैश्विक मान्यता को भी बढ़ा रहे हैं।

समर्पित विक्रय और इंफ्रास्ट्रक्चर के स्थान

उत्पाद की दृश्यता बढ़ाने, खरीदारों तक पहुंच को मजबूत करने और पारंपरिक उत्पादकों के लिए नए अवसर पैदा करने के लिए कुछ प्लेटफॉर्म पेश किए गए हैं।

- **पीएम एकता मॉल (यूनिटी मॉल):** पीएम एकता मॉल एक जिला एक उत्पाद (ओडीओपी) वस्तुओं, जीआई-टैग वाले उत्पादों और अन्य हस्तशिल्प को बढ़ावा देता है और बेचता है। सभी राज्यों (वित्त वर्ष 2023-24) में इन मॉलों की स्थापना के लिए 5,000 करोड़ रुपये का आवंटन किया गया था।
- **वन स्टेशन वन प्रोडक्ट (ओएसओपी):** ओएसओपी पहल के तहत रेलवे जीआई बूथ जीआई-टैग किए गए उत्पादों को प्रदर्शित करने और बेचने के लिए समर्पित स्टॉल प्रदान करते हैं। वे क्षेत्रीय शिल्प, वस्त्र, हथकरघा और खाद्य उत्पादों की पहुंच बढ़ाते हैं। ओएसओपी कारीगरों, बुनकरों, किसानों और उत्पादक समूहों को सीधी बाजार पहुंच प्रदान करते हैं।

जीआई ट्रेल

जीआई क्लस्टरों को मुख्यधारा के पर्यटन यात्रा कार्यक्रमों में एकीकृत किया जा रहा है। फ्रांस में वाइन टूर की तरह, भारत **जीआई ट्रेल** (जैसे पोचमपल्ली इकत बुनाई गांव का दौरा या दार्जिलिंग चाय बागान ट्रेल) के साथ प्रयोग कर रहा है। यह प्रत्यक्ष-से-उपभोक्ता ग्रामीण खुदरा के साथ अनुभवात्मक पर्यटन का मिश्रण है।

जून 2026 में, **असम में सिल्क टूरिज्म पार्क और मुगा उत्सव उत्सवों के साथ-साथ मुगा सिल्क ट्रेल की घोषणा की गई थी।** यह असम को रेशम विरासत पर्यटन के लिए एक प्रमुख गंतव्य के रूप में स्थापित करता है।

एमएसएमई अभिनव योजना

जीआई सहित आईपी संरक्षण और व्यावसायीकरण के लिए एमएसएमई अभिनव योजना के बौद्धिक संपदा अधिकार (आईपीआर) घटक के तहत सहायता प्रदान की जाती है। इस योजना के तहत, पात्र आवेदक

जीआई पंजीकरण के लिए किए गए वास्तविक लागत की प्रतिपूर्ति प्राप्त कर सकते हैं। प्रतिपूर्ति लागत का शत-प्रतिशत तक कवर करती है, जो प्रति पंजीकृत जीआई 2 लाख रुपये की अधिकतम सीमा के तहत है।

वित्तीय सहायता

वस्त्र मंत्रालय के तहत विकास आयुक्त (हस्तशिल्प) का कार्यालय जीआई संरक्षण के लिए वित्तीय सहायता प्रदान करता है। योग्य आवेदक जीआई अधिकारों को लागू करने और जीआई के संरक्षण से संबंधित कानूनी खर्चों को कवर करने के लिए 1.5 लाख रुपये तक प्राप्त कर सकते हैं। इसके अलावा, सरकार राष्ट्रीय हथकरघा विकास कार्यक्रम (एनएचडीपी) और राष्ट्रीय हस्तशिल्प विकास कार्यक्रम (एनएचडीपी) के तहत उत्पादों को बढ़ावा देती है। डिजाइनों/उत्पादों के पंजीकरण, कार्यान्वयन एजेंसियों के प्रशिक्षण कार्मिकों को प्रशिक्षित करने और जीआई पंजीकरण के प्रभावी प्रवर्तन में होने वाले खर्चों को पूरा करने के लिए वित्तीय सहायता की पेशकश की जाती है।

एनएचडीपी (जून 2026) के एक घटक, हथकरघा विपणन सहायता के **तहत 104 जीआई-पंजीकृत हथकरघा उत्पाद और 53 पंजीकरण समर्थित हैं।**

एपीडा का निर्यात अभियान

कृषि और प्रसंस्कृत खाद्य उत्पाद निर्यात विकास प्राधिकरण (एपीडा) भारत के जीआई-टैग वाले कृषि उत्पादों की वैश्विक उपस्थिति को मजबूत कर रहा है। यह **गुणवत्ता सुधार, क्षमता निर्माण, बुनियादी ढांचे के समर्थन और बाजार संवर्धन के माध्यम से किसानों और निर्यातकों का समर्थन करता है।**

2026 में, एपीडा ने किसानों और उत्पादक समूहों के लिए नए अंतरराष्ट्रीय बाजार खोलकर जीआई-टैग वाले उत्पादों के निर्यात में तेजी लाई। ताजे फलों से लेकर पारंपरिक चावल और प्रसंस्कृत खाद्य पदार्थों तक, इन पहली बार शिपमेंट ने **उत्पादकों के लिए रिटर्न में सुधार करते हुए भारत की क्षेत्रीय विशिष्टताओं की वैश्विक उपस्थिति को मजबूत किया।**

बाजार	जीआई उत्पाद	प्रमुख प्रभाव
मालदीव	कर्नाटक जीआई फ्रूट	किसानों को 40-50 प्रतिशत अधिक लाभ
कनाडा	सलेम सागो	मांग में वृद्धि, बेहतर आय
ब्रिटेन और इटली	जोहा राइस	नए निर्यात बाजार और बेहतर मूल्य

दुबई	तेजपुर लीची	उत्पादकों को 10 प्रतिशत से अधिक लाभ

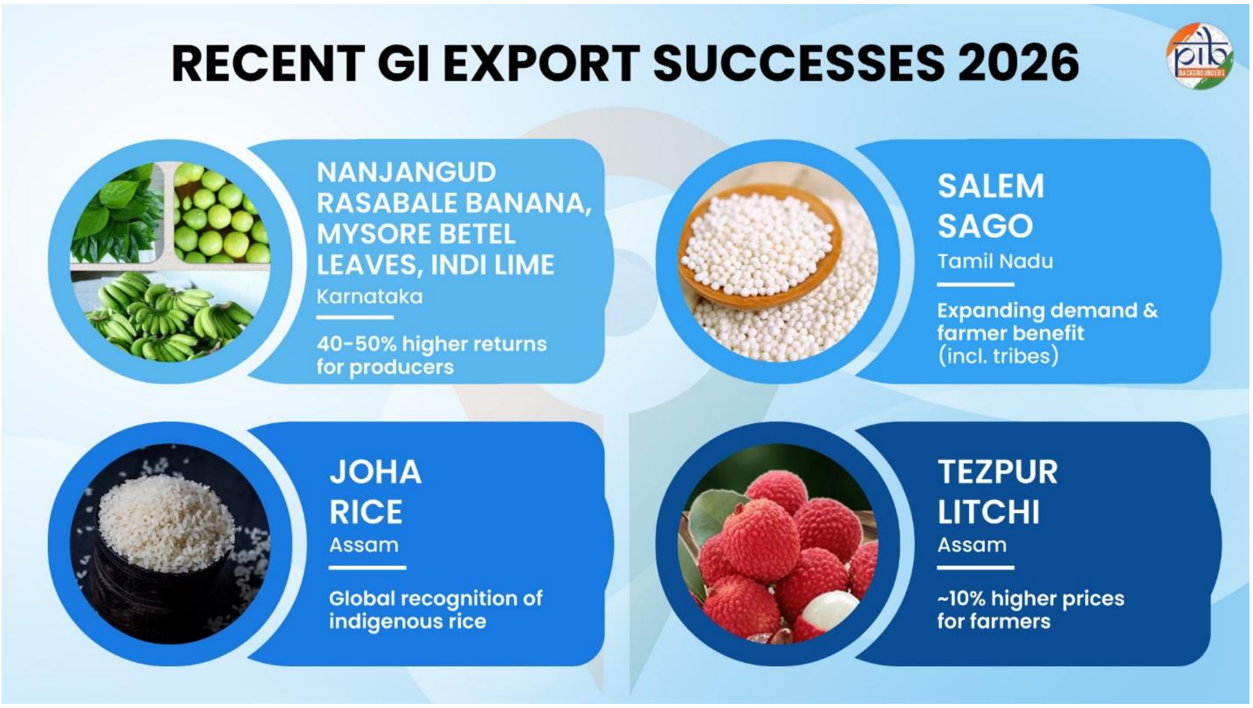

यूरोपीय संघ-भारत एफटीए कनेक्शन

मुक्त व्यापार समझौते (एफटीए) विशिष्ट क्षेत्रीय उत्पादों के लिए बाजार पहुंच का विस्तार करके जीआई के मूल्य को बढ़ाते हैं। जीआई टैग प्रामाणिकता और उत्पत्ति को प्रमाणित करते हैं, जबकि **एफटीए व्यापार बाधाओं को कम करते हैं और निर्यात के अवसरों में सुधार करते** हैं। उनके बढ़ते महत्व को दर्शाते हुए, जीआई भारत की व्यापार वार्ता में एक प्रमुख मुद्दा बन गए हैं-

- भारत-ओमान सीईपीए **पर हस्ताक्षर होने के बाद**, दिसंबर 2025 में कर्नाटक से 3 मीट्रिक टन इंडी लाइम ओमान को निर्यात किया गया था। ओमान को जीआई-टैग वाले इंडी लाइम का निर्यात जीआई प्रमाणन द्वारा प्रदान किए गए मूल्यवर्धन को दर्शाता है।
- **न्यूज़ीलैंड** ने भारतीय जीआई उत्पादों के पंजीकरण को सक्षम करने के लिए भी प्रतिबद्धता जताई है, यह विशेषाधिकार वर्तमान में केवल यूरोपीय संघ को दिया गया है। इस कदम से न्यूजीलैंड के बाजार में दार्जिलिंग चाय, बासमती चावल और क्षेत्र-विशिष्ट हस्तशिल्प जैसे भारतीय उत्पादों के लिए औपचारिक जीआई सुरक्षा सुरक्षित होगी।
- भारत-यूरोपीय संघ एफटीए वार्ता में, दोनों पक्ष एक समर्पित जीआई समझौते पर बातचीत जारी रखते हैं।

बढ़ावा हेतु कार्यक्रम

जीआई-टैग किए गए उत्पादों को प्रदर्शित करने, बाजारों को व्यापक बनाने और कारीगरों और बुनकरों की आजीविका का समर्थन करने के लिए प्रदर्शनियां, जागरूकता कार्यक्रम और अंतरराष्ट्रीय व्यापार कार्यक्रम आयोजित किए जाते हैं।

- **प्रदर्शनियों में** शिल्प मेले, दिल्ली हाट कार्यक्रम और समर्पित जीआई प्रचार कार्यक्रम शामिल हैं। **बुनकरों और कारीगरों के लिए** शिखर सम्मेलन, सेमिनार और कार्यशालाएं भी आयोजित की जाती हैं।
- **जीआई एंड बियोन्ड: विरासत से विकास तक** जैसे ***कार्यक्रम*** जीआई हथकरघा उत्पादों की विरासत, प्रामाणिकता और शिल्प कौशल को प्रदर्शित करते हैं। वे घरेलू और अंतरराष्ट्रीय भागीदारों के बीच जागरूकता बढ़ाने में भी मदद करते हैं।
- हाल ही में, वर्ल्ड फूड इंडिया, 2025, ट्राइबल बिजनेस कॉन्क्लेव, 2025 और इंडिया एआई इम्पैक्ट समिट, 2026 **में जीआई उत्पादों को बढ़ावा दिया गया था।** उन्हें वाराणसी, दिल्ली, मुंबई हवाई अड्डे और यहां तक कि दिल्ली मेट्रो में स्क्रीन, डिस्प्ले बोर्ड, कन्वेयर बेल्ट आदि के माध्यम से भी प्रोत्साहित किया जाता है।
- घरेलू कार्यक्रमों के अलावा, **भारत के जीआई उत्पादों के लाइव प्रदर्शन और प्रदर्शनियां विदेशों में भी आयोजित की जाती हैं**। उदाहरणों में **बर्मिंघम, ब्रिटेन में ऑटम फेयर इंटरनेशनल 2024 और जर्मनी के बाजार बर्लिन 2024 शामिल हैं**।

आगे का रास्ता: भारत की जीआई सफलता की कहानी

भारत का जीआई इकोसिस्टम परंपरा और अवसर के बीच एक सेतु के रूप में विकसित हो रहा है। विरासत की रक्षा करना और स्थानीय उत्पादकों को सशक्त बनाना, जीआई टैग स्थायी आर्थिक मूल्य बनाते हैं। वे घरेलू और वैश्विक बाजारों तक पहुंच का विस्तार भी करते हैं। ये प्रयास सुनिश्चित करते हैं कि भारत के अद्वितीय क्षेत्रीय उत्पाद पीढ़ियों तक फलते-फूलते रहें। **2030 तक 10,000 जीआई पंजीकरण के लक्ष्य के साथ**, भारत अपनी विरासत अर्थव्यवस्था को मजबूत करने और अपने अद्वितीय क्षेत्रीय उत्पादों की वैश्विक उपस्थिति को बढ़ाने के लिए अच्छी स्थिति में है।

संदर्भ

इलेक्ट्रानिक्स एवं सूचना प्रौद्योगिकी मंत्रालय
https://varanasi.nic.in/district-produce/banarasi-saree/
https://ariyalur.nic.in/geographical-indications/

विधि एवं न्याय मंत्रालय

https://www.indiacode.nic.in/bitstream/123456789/1981/5/A1999-48.pdf
https://ipindia.gov.in/frontend/pdf/mannual/GAZETTE_NOTIFICATION_AMENDED_GI_RULES_2025.pdf
https://www.indiacode.nic.in/handle/123456789/1981
https://www.indiacode.nic.in/bitstream/123456789/1981/1/a199948.pdf

पर्यटन मंत्रालय

https://www.incredibleindia.gov.in/en/karnataka/channapatna-toys-and-dolls
https://www.indiator.com/package/a-day-excursion-to-textile-village-pochampally-from-hyderabad
https://www.incredibleindia.gov.in/en/west-bengal/darjeeling/happy-valley-tea-estate

वस्त्र मंत्रालय

https://www.indiahandmade.com/blog/why-do-gi-tags-make-indian-handicrafts-global-and-boost-artisan-livelihoods?srsltid=AfmBOorwnYG19-Hd5LVKdyTeYtIIrcMJ_TZX-vUeJ6V61Du9bZ7Wrb4b
https://www.pib.gov.in/PressReleasePage.aspx?PRID=2152551&reg=48&lang=2
https://x.com/TexMinIndia/status/2066117182086603038
https://www.pib.gov.in/Pressreleaseshare.aspx?PRID=1579529&reg=48&lang=2
https://www.pib.gov.in/PressReleaseIframePage.aspx?PRID=2113550&reg=48&lang=2

वाणिज्य एवं उद्योग मंत्रालय

https://www.pib.gov.in/PressReleasePage.aspx?PRID=2113966&reg=48&lang=2
https://sansad.in/getFile/loksabhaquestions/annex/187/AU2947_WBLKzd.pdf?source=pqals
https://ipindia.gov.in/frontend/pdf/gi/registered/State_wise_Registered_GI_of_India.pdf
https://www.pib.gov.in/PressReleaseDetail.aspx?PRID=2239598&reg=6&lang=1
https://www.pib.gov.in/PressReleasePage.aspx?PRID=2270578&reg=3&lang=1
https://www.commerce.gov.in/files/2026-04/final_1.pdf
https://www.dpiit.gov.in/static/uploads/2026/03/863a5fef349d79a1bba316c4b51eaacb.pdf
https://www.pib.gov.in/PressReleaseIframePage.aspx?PRID=2206803&reg=48&lang=2
https://www.pib.gov.in/PressReleasePage.aspx?PRID=2149738&reg=48&lang=2

सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्यम मंत्रालय

https://www.pib.gov.in/PressReleasePage.aspx?PRID=2271522&reg=3&lang=1
https://innovative.msme.gov.in/Home/AboutIpr
https://ciprpf.com/msme-innovative-scheme
https://www.pib.gov.in/PressReleasePage.aspx?PRID=2038537&reg=48&lang=2

पूर्वोत्तर क्षेत्र विकास मंत्रालय

https://www.pib.gov.in/PressReleasePage.aspx?PRID=2268097&reg=48&lang=2

रेल मंत्रालय

https://www.pib.gov.in/PressReleaseIframePage.aspx?PRID=1942801&reg=48&lang=2

यूरोपीय संसद

https://www.europarl.europa.eu/legislative-train/theme-a-global-europe-leveraging-our-power-and-partnerships/file-eu-india-fta-bit-and-gi-agreement?sid=10301

साउथ एशियन जर्नल ऑफ मैनेजमेंट रिसर्च

https://siberindia.edu.in/journals/SAJMR/Oct-2021/Paper-5.pdf

पेटेंट, डिजाइन और ट्रेडमार्क महानियंत्रक और जीआई रजिस्ट्रार कार्यालय

https://ipindia.gov.in/frontend/pdf/mannual/1_31_1_manual-of-geographical-indications-practice-and-procedure.pdf

चाणक्य नेशनल लॉ यूनिवर्सिटी

https://www.cnlu.ac.in/wp-content/uploads/2025/04/15-Yashna-Walia-and-Shreya-Kumar-1.pdf

आईबीईएफ

https://www.ibef.org/giofindia
https://www.ibef.org/blogs/promotion-of-geographical-indications-gis-in-india

पीआईबी शोध एकक

****

पीके/केसी/एसकेएस/एसवी